AMOGHVARTA

ISSN : 2583-3189

उर्मिला का संताप

ORIGINAL ARTICLE

Author
डॉ. चन्द्रशेखर सिंह राजपूत
हिंदी विभाग
सहायक प्राध्यापक
शासकीय नवीन महाविद्यालय
कुई– कुकदुर, पण्डरिया
कबीरधाम, छत्तीसगढ़, भारत

शोध सार

साकेत महाकाव्य की रचना का मूल उद्देश्य रामकथा की उपेक्षिता नारी उर्मिला को महिमामण्डित करना है। उर्मिला को केन्द्र में रखकर ही साकेत महाकाव्य की रचना हुई है। रामचरित मानस पर अनेक ग्रन्थ लिखे गये हैं पर राम और सीता के चरित्र– चित्रण पर ही इनके प्रणेताओं का सारा ध्यान लगा रहा। उर्मिला के महान आत्म– त्याग या उसकी विरह व्यथा पर किसी ने एक शब्द भी नहीं लिखा। उर्मिला का चरित्र परमोज्ज्वल है। उर्मिला का त्याग सबसे बड़ा था। राम के साथ हठ करके सीता वन में गयी। श्रुतकीर्ति तथा मांडवी को विरह– व्यथा सहनी ही नहीं पड़ी पर नवविवाहिता उर्मिला विवाह होते ही वियोगिनी हो गयी। उर्मिला का मूल रूप भले ही किसी प्रकार का रहा हो पर साकेत में गुप्त जी ने जिस उर्मिला की सृष्टि की है वह दिव्य सौंदर्य की प्रतिमा है, तथा, कवि की कल्पना का संस्पर्श पाकर विनोदशील एवं हास– परिहासमयी भोली– भाली, सुकुमार हृदया पत्नि के रूप में सामने आई है।

मुख्य शब्द

साकेत महाकाव्य, नारी, उर्मिला.

प्रस्तावना

मैथिलीशरण गुप्त ने रामकथा की उपेक्षित पात्र उर्मिला को अपने महाकाव्य साकेत की नायिका के आसन पर बैठाया है। उन्होंने उर्मिला के विरह का सुन्दर चित्रण किया है। 'साकेत' की प्रमुख घटना उर्मिला का विरह– वर्णन है। साकेत की उर्मिला दिव्य सौन्दर्य से ओत– प्रोत महिमामयी नारी है, विनोद वार्ताओं में निपुण राजमहिषी है। त्याग एवं धैर्य की सजीव प्रतिमा है। आत्म बलिदान के भावों से ओत–प्रोत उर्मिला में नारी सुलभ सुकुमारता एवं शालीनता विद्यमान है। उसमें देश प्रेम एवं स्वाभिमान की भावना कूट–कूटकर भरी हुई है साथ ही वह सेवा, प्रेम, त्याग, तपस्या पतिपरायणता, आत्मगौरव जैसे अनेक गुणों से ओत प्रोत है।[1]

उर्मिला– वीरपुंगव लक्ष्मण की पत्नी है। उर्मिला मैथिलीशरण गुप्तकृत महाकाव्य ''साकेत'' की नायिका है। वह अनिंध, सुंदरी, ललित कला निपुण एवं सुसंस्कृत कुलवधू है। सर्वप्रथम वह एक प्रेमिका के रूप में उपस्थित होती है तथा उसका प्रेम भोग– प्रधान है, परन्तु अवसर आने पर वह बलिदान करती है। लक्ष्मण जब राम के साथ वनगमन का निश्चय कर लेते हैं, तब उर्मिला अपने मन को प्रिय– पथ का विघ्न नहीं बनने देती। पति को कर्तव्यपालन से विमुख न कर स्वयं चौदह वर्ष के विरह का वरण करती है। परिस्थिति की विषमता उसके विरह को और भी करुण

बना देती है। विरह काल में उसके हृदय का और भी प्रसार हो जाता है। उर्मिला का विरह नित्य प्रति के पारिवारिक जीवन से प्रतिफलित हुआ है अतएव संयमित एवं मर्यादित है। वह एक वीर नारी के रूप में उपस्थित होती है।[2]

उर्मिला का विरह–वर्णन

प्रत्येक कवि के अन्तः करण में एक विरहिणी है, जिसका रुदन कवि की साहित्य सृष्टि के रूप में अभिव्यक्ति पाता है। उस रुदन की अनुभूति में कवि सुख का अनुभव करता है। कवीन्द्र रवीन्द्र ने एक स्थान पर लिखा है ''मेरे हृदय में एक विरहिणी नारी बैठी है जो अपने दुःख का गीत सुनाया करती है।'' यदि रवीन्द्रबाबू का यह कथन अक्षरस सत्य है तो वह विरहिणी नारी केवल रवीन्द्रबाबू के हृदय में ही नहीं बैठी वरन् अन्य कवियों के आत्मा में उसका निवास है। इसी नारी ने भवभूति के हृदय में सीता का रूप धारण किया, कालीदास के हृदय में शकुंतला का, सूर के हृदय में राधा का तथा जायसी के हृदय में नागमती का रूप धारण किया। इसी भाँति गुप्त जी के हृदय में वही विरहिणी उर्मिला बन गई। सुमित्रा नंदन पंत ने तो स्पष्ट कहा हैः

वियोगी होगा पहला कवि, आह से निकला होगा गान।
उमड़कर आँखों से चुपचाप बही होगी कविता अंजान।

अश्रु से कवि की आत्मा निर्मल हो जाती है। हिंदी काव्य साहित्य में विरह की एक सुदीर्घ परम्परा है। कबीर, जायसी, सूर, देव धनानंद और ठाकुर की वेदना में उनकी विरहिणी मुखर हुई है। मैथिलीशरण गुप्त भी इस दृष्टि से अग्रणी रहे है। उन्होंने भी अपना हृदय नायिका के कंठ में उड़ेलकर, उसका सहारा लेकर विरहगान किया। उनकी विरहिणी है उर्मिला। उर्मिला का विरह साकेत की सबसे महत्वपूर्ण घटना है। उसकी परिस्थिति बड़ी करुणाजनक है। साकेत में उर्मिला ही सबसे निराश्रित प्राणी है। सीता, राम के साथ छाया की भांति लगी रहती है। माण्डवी तथा श्रुतकीर्ति भी अपने अपने पतियों के साथ बनी रहती हैं। केवल उर्मिला ही विवश है– उसके पास कोई साधन नहीं कि वह अपनी पीड़ा को शान्त कर सके। वियोग के समय उर्मिला के नेत्रों में जो अश्रु प्रवाह हुआ है, उससे केवल उर्मिला का ही नेत्र नहीं भीगे हैं वरन् साकेत के पढ़ने वाले पाठकों के नेत्र भी अश्रुपूरित हो जाते हैं। उर्मिला का विरह वर्णन निम्न शीषर्कों में प्रस्तुत किया जा सकता हैः

- **विरह में प्रकृति चित्रणः** शरद ऋतु का आगमन होने पर खंजन पक्षी दिखाई देने लगते हैं, धूप खिल गई है, सरोवर जल से भरे दिखाई दे रहे हैं और हंस उनमें कीड़ा करते दिखाई दे रहे हैं। विरहिणी उर्मिला को शरद के रूप में अपने प्रिय लक्ष्मण के विभिन्न अंगों के दर्शन हो रहे हैं। वह अपनी सखी से कहती हैः

  निरख सखी ये खंजन आये. ....

  इसी प्रकार शिशिर ऋतु के सारे उपादान विरहिणी उर्मिला को अपने तन में ही दिखाई पड़ रहे हैं। जिस प्रकार वन उपवन पतझड के कारण शुष्क हो गए हैं उसी प्रकार विरहिणी उर्मिला का शरीर, विरह में सूख गया है।

- **कर्तव्यनिष्ठः** चित्रकूट में एक बार उर्मिला का मिलन अपने प्रिय लक्ष्मण से होता है। यह मिलन सीता के द्वारा कराया गया है क्योंकि एक स्त्री ही स्त्री हृदय को पहचान सकती है। आजकल लगभग हिन्दू परिवार में यह दृश्य देखने को मिलता है। यध्यपि उर्मिला और लक्ष्मण का क्षणिक मिलन होता है, परन्तु उस समय लक्ष्मण की दशा देखते ही बनती है। वे तो अपने समक्ष उर्मिला को देखकर कर्तव्यविमूढ़ हो जाते हैं तथा वे निश्चय नहीं कर पाते की उर्मिला ही है। निराश होकर उर्मिला ही कहती हैः

  ''मेरे उपवन के हरिण, आज वनचारी,
  मै बांध न लूँगी तुम्हे, तजो भय भारी।''

  लक्ष्मण की उस विषम परिस्थिति को देखकर उर्मिला विश्वास दिलाती है– मै अब तुम्हे बंधन में नहीं बांधूंगी, क्योंकि मैंने स्वेच्छा से ही तुम्हे छोड़ा है इसीलिए भयभीत होने की आवश्यकता नहीं हैः

- **गृहस्थ के प्रति दृढ़ताः** उर्मिला का विरही जीवन नित्य प्रति के गृहस्थ जीवन की वस्तु है। इस दृष्टि से उर्मिला की दृढ़ता प्रशंसनीय है। वह चाहती तो कुल मर्यादा छोड़कर योगिनी बन सकती थी और घर छोड़

कर जा सकती थी, परन्तु उसने ऐसा नहीं किया। उसका जीवन तो एक कारागार बन गया है। उसका तो एक– एक पल एक–एक वर्ष, के समान व्यतीत हो रहा है। जैसे प्रातःकाल होता है, संध्या होती है उसी भांति उर्मिला भी खाती है, पीती है, सोती है और रोती है। उर्मिला आदर्श गृहिणी की तरह अपने मन को अनेक प्रकार से समझाती है। उर्मिला विरहावस्था में भी मर्यादा को नहीं भूलती है। घर गृहस्थी के कार्यो में लगी रहती है। पशु– पक्षी पालन, चित्र बनाने, कला मंदिर खोलने में व्यस्त रही है। दीपक की भाँति जलकर वह संसार को प्रकाशित करना चाहती है।[3]

- **विरहिणी उर्मिला का दर्पः** विरहिणी उर्मिला को काम भावना भी सता रही है। वह कामदेव से कहती है कि में तो अबला हूँ और फिर वियोग व्यथा से पीड़ित हूँ। तुम्हें यह शोभा नहीं देता कि तुम मेरे ऊपर प्रहार करो। यदि तुम्हें अपने रूप का गर्व है तो उसे मेरे पति पर न्योछावर किया जा सकता है और यदि तुम्हें अपनी पत्नी रति के रूप का घमंड हो, तो लो मेरी चरण धूलि ले जाओ और उस पर न्योछावर कर दोः

  मुझे फूल मत मारो!
  मैं अबला बाला वियोगिनी, कुछ तो दया विचारो।

  उर्मिला को विरह की ऋतुएँ भी प्रभावित करती हैं। ग्रीष्म ऋतु के ताप में उसे लक्ष्मण का तप दिखाई देता है। आकाश में घुमड़ते बादलों में अपने उच्छवास को देखती है, शरद ऋतु में बगुलों की पंक्तियाँ लक्ष्मण का सन्देश लेकर आते जान पड़ते हैं। नयी उमंग लाने वाली बसंत ऋतु उसके विरह को बढ़ा देती है। आत्मीयता की भावना वियोग एवं दुःख की दशा में आत्मीयता की भावना स्वतः बढ़ जाती है। उर्मिला में तो यह भावना अतिशयता में है, यह नैसर्गिक नियम है कि सहानुभूति प्राप्त करने के लिए सहानुभूति प्रदान करना भी आवश्यक हैद्य वैसे भी ममत्त्व मिलते ही दुःखी हृदय अनायास ही उमड़ पड़ता है तभी उर्मिला की स्नेह अपने समीप रहने वाले सभी प्राणियों पर बिखर रहा हैः

  ''कोक, शोक मत कर हे तात, कोकि कष्ट में हूँ मैं भी तो सुन तू मेरी बात।''

- **प्राचीनता एवं नवीनता का समावेशः** उर्मिला के विरह वर्णन में एक ओर तो प्राचीन परिपाटी का निर्वाह करते हुए विरहताप, विरह जन्य कृशता तथा अश्रु प्रवाह का समावेश है तो दूसरी ओर उसमें कहीं भी अस्वभाविकता न होकर सर्वत्र मनोवैज्ञानिकता अपनाई गई है। ऋतु– वर्णन में नायिका की परिवर्तित दिनचर्या का उल्लेख है।[4] विरह जन्य अवस्था का उल्लेख निम्न पंक्तियों में किया हैः

  मानस मन्दिर में सती प्रिय की प्रतिमा थाप।
  जलती सी उस विरह में बनी आरती आप।।

  मनोवैज्ञानिकता आधुनिकता की ही देन है। ''साकेत'' में कैकयी एवं उर्मिला के मानसिक द्वन्द्व का चित्रण अधिक हुआ है। नवम सर्ग में उर्मिला का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण बड़ी ही कुशलता से किया गया है। उसकी मानसिक स्थिति का गूढ़ विश्लेषण हुआ है।[5] इस प्रकार यह काव्य ग्रन्थ प्राचीनता और नवीनता का मणि–कांचन संयोग लेकर उपस्थित हुआ है। कवि ने यह समन्वय भाव– पक्ष और कला– पक्ष दोनों ही क्षेत्रों में किया है। डॉ गोविन्द राम शर्मा का मत हैः साकेत पाश्चात्य युग की देन है, पर साथ ही उसमें आधुनिक युग की नूतन भावनाएं भी स्थान स्थान पर मुखरित हो उठी है।

निष्कर्ष

संक्षेप में कहा जा सकता है कि गुप्त जी ने साकेत में नारी के गौरव को अक्षुण्ण रखते हुए उसके जननी, भार्या, जन–सेविका, प्रिया रूप के आकर्षक चित्र उतारे हैं। साकेत में उर्मिला का चरित्र अत्यन्त ही उज्ज्वल तथा गेय है। आवेगपूर्ण यौवन के अनुरागमय और सावेश प्रेम पर वह जितना नियन्त्रण करती है, वह मानवीय त्याग का सर्वोच्च उदाहरण है। उर्मिला का विरह वर्णन उदात्त है। उसमें कर्तव्यपरायणता, सेवाभाव, पति मिलन की आशा, साधना और आत्म– सन्तोष का विशिष्ट भाव है। वह राजमहल में रहते हुए भी समस्त भोगों को त्यागकर तपस्विनी–

सा जीवन व्यतीत करती है। उर्मिला का विरह वर्णन हिदी साहित्य में अनुपम और अविस्मरणीय है, पाठको के मन में सदैव जीवंत रहने वाला है।

सन्दर्भ सूची

1. अशोक तिवारी (2024) यू.जी.सी. नेट, सेट प्रतियोगिता साहित्य सीरिज, साहित्य भवन पब्लिकेशन, हास्पिटल रोड आगरा, पृ. 76।
2. श्रीवास्तव, काशीनाथ प्रसाद (2005) *जिज्ञासुः मानस मंथन अध्यात्म एवं विज्ञान,* आर.डी.पांडेय सत्यम् पब्लिशिंग हाऊस, एन 3/25 मोहन गार्डन, नई दिल्ली, पृ. 221।
3. मौर्य, प्रदीप कुमार (2021) *आधुनिक काव्य,* पायनियर पब्लिशर, 2/97 दया बस्ती, न्यू रोहतक रोड, करोल बाग सेंट्रल देल्ही, पृ. 04।
4. तिवारी, अशोक (2024) यू जी सी नेट सेट प्रतियोगिता साहित्य सीरिज, प्रकाशक साहित्य भवन पब्लिकेशन, हास्पिटल रोड आगरा, पृ. 79।
5. मौर्य, प्रदीप कुमार (2021) *आधुनिक काव्य,* पायनियर पब्लिशर, 2/97 दया बस्ती, न्यू रोहतक रोड, करोल बाग सेंट्रल देल्ही, पृ. 08।

——==00==——